रात्रि क्लास 22/9/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

रचयिता और रचना की कहानी तो सारी बच्चों को समझा दिया। जो नहीं जानते थे। जिस कारण नास्तिक भी थे। और अभी मालूम पड़ा है हम आसुरी सम्प्रदाय के थे। फिर अब ईश्वरीय सम्प्रदाय के बने दैवी सम्प्रदाय के बनते हैं। तो इसके लिए अवगुण निकाल दैवीगुण धारण करते रहते हो। यह तुम बच्चों पर है। बाबा ने डायरेक्शन दिया है अवगुण निकाल दैवीगुण धारण करते रहना है। तुम बच्चे दैवी सम्प्रदाय के बन रहे हो। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार दैवीगुण धारण करते रहते हैं। रोज़2 इसके लिए सावधानी भी दी जाती है जिसको तारणा भी कहे। अगर सम्पूर्ण दैवीगुण धारण न करेंगे तो सम्पूर्ण चन्द्रमा भी न बनेंगे। बच्चे भी कल्प2 अनुसार पुरुषार्थ करते रहते हैं। इसमें नम्बरवन पुरुषार्थ है याद की यात्रा। हम ब्राह्मण तो यात्रा पर जा रहे हैं। किस पार? उस पार। यह तो छी2 वैश्यालय है। हम योगबल से शिवालय जा रहे हैं। बच्चों को खुशी होती है सिमरण कर। कोई2 सिमरण कराने वाला, सावधान करने वाला मिल जाता है तो सावधान हो जाते हैं। याद की यात्रा और दैवीगुण धारण करना यह है मुख्य बात। पवित्र तो बनना ही है सबको; क्योंकि पवित्र थे। बाप रोज़2 सावधानी देते हैं तो साबधान हो जावेंगे। बाप जानते हैं माया प्रबल है। महारथी भी असावधान है तो उनको भी हप करने की कोशिश करेगी। फील करेंगे माया कुछ न कुछ विघ्न डालती है। जिस कारण अवस्था भी सुस्त हो जाती है। फिर कोई सावधानी मिलती है तो चुस्त बनते हैं। सुस्त बनाने वाली माया, चुस्त बनाने वाला है बाप। अभी तुम चुस्त बने हो बाप द्वारा। मीठे2 बच्चे माया से सुस्त बाप से चुस्त होते ही रहते हो। पुरुषार्थ होता ही रहता है। अभी बाप चुस्त बनाने वाला आया है। युद्ध के मैदान में कोई अपन को चुस्त नहीं समझते। तुमको भी सुस्त न होना चाहिए। नहीं तो हार खालेंगे। प्वाइंट्स समझते भी हैं। रिफ्रेश होते हो तो शोक होना चाहिए फिर सर्विस करने का। चुस्त करने वाले वा सावधान करने वाले यहाँ आ जाते हैं। तो कहते हैं हम सुस्त बन गये हैं। यूँ मुरली से भी चुस्त हो सकते हैं। माया साथ युद्ध है। तुम युद्ध के मैदान में हो ही। कहाँ भी कोई जाये बाप की याद की यात्रा में युद्ध ही कहा जाता है। बाकी संग का रंग लगता है। बाहर जाने से फिर वह संग हो जाता है। जिनमें ज्ञान ही नहीं है उस कुसंग के कुछ लेस आते हैं। यहाँ लेस नहीं आ सकती। बच्चे चुस्त कर लेते हैं। यहाँ आने में थोड़ी सेफ्टी है। यहाँ कोई कुसंग नहीं। बाहर में तो अनेक प्रकार के कुसंग हैं। समझना चाहिए यह हमारा मित्र नहीं बल्कि दुश्मन है। वाह्यात बातें बच्चों को सुननी न चाहिए। पराई पचर यह तो मायावी बातें हैं हमको ज्ञान की बातें सुनाओ। यहाँ बाप भी सम्मुख बैठे रहते हैं भल गायन है घर की गंगा का इतना मान नहीं होता। बाहर से बड़ा प्रेम से आते हैं। यहाँ बाप घर में है तो इतना लव नहीं रहता। नम्बरवार है ना। यह बेहद की कहानी बाप के सिवाय कोई बता न सके। यह है हार जीत, सुख–दुख की कहानी। हद की कहानियाँ आदि तो बहुत बना दी हैं। तुम्हारी है बेहद की बात। यहाँ बाप याद दिलाये रिफ्रेश करते रहते हैं। एक/दो में उन्नति की बातें ही सुनते रहो। बाकी बिल्कुल न सुनो; परन्तु रह नहीं सकते। खुद भी समझते हैं फालतू बातें सुनते हैं। वह भी ड्रामा में है। तो सुन लेते हैं। यहाँ तो बच्चे शान्ति स्थापन ..... हैं। बाप ने समझाया है तुम सुख और शान्ति दोनों स्थापन करते हो। प्रजा तो बहुत बन रही है। जहाँ2 ब्राह्मण है वह कुछ न कुछ आप समान जरूर बनाते हैं। बाहर वालों को चान्स अच्छा रहता है। मुसाफिरी में तो बहुत नये2 मिलते हैं। चित्र दिखा समझाना होता है। बच्चे जानते हैं यज्ञ में भी विघ्न पड़नी है। यह है ज्ञान यज्ञ। शिव ज्ञान–यज्ञ। ज्ञान भी बाप ही देते हैं। पढ़ाई को भी ज्ञान ही कहें जीवनमुक्ति के लिए भी इनको ज्ञान कहें। मुँझने की बात ही नहीं। मनुष्य ब्रह्मा को देख मुँझते हैं। शास्त्रों में कुछ और है। तुम कुछ और सुनाते हो। इसलिए यह आवाज होता है। भक्ति मार्ग में कब अबलाओं पर विख के लिए अत्याचार नहीं होते। बाप जब आते हैं तो खिट–पिट होता है। अबलाओं पर अत्याचार होते हैं शादी न करने कारण अत्याचार हो जाते हैं। कन्या का इतना मान रखते हैं जो सभी उनको माथा टेकते हैं। यह सतसंग और सभी से न्याया है। बच्चे ही जानते हैं बाहर वाला तो कोई जानते ही नहीं। अच्छा मीठे–2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यार गुडनाइट और नमस्ते।